Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ram Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 05/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,

Topic -

असामान्य मनोविज्ञान का क्षेत्र या विषयवस्तु (Scope or Subject Matter of Abnormal Psychology)

असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र या विषयवस्तु से तात्पर्य उन सभी वस्तुओं या तथ्यों से हैं,जिनका अध्ययन इसमें किया जाता है। साधारण शब्दों में असामान्य मनोविज्ञान में असामान्य व्यक्तियों के अनुभवों तथा व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। अतः यहीं इसकी विषयवस्तु कही जाएगी। लेकिन, सच तो यह है कि असामान्य व्यक्तियों के अनुभव तथा व्यवहार के कई रूप होते हैं, जिनका अध्ययन असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाता है। अतः इस अर्थ में इस विषय का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। तथा यह इतनी तेजी से विकसित होता जा रहा है कि सभी बातों को समाहित करना व्यावहारिक रूप से सम्भव ही नहीं है। सुविधा की दृष्टि से इसके क्षेत्र या विषयवस्तु को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) सामान्यता एवं असामान्यता की अवधारणा (Concepts of Normality and Abnormality)-असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत सामान्यता एवं असामान्यता सम्बन्धी अवधारणाओं का वर्णन एवं व्याख्या की जाती है। जैसे-सामान्यता एवं असामान्यता क्या हैं, इनकी कसौटियाँ, मापदण्ड या विशेषताएँ कौन-कौन सी हैं? सामान्य तथा असामान्य व्यवहार के मध्य क्या अन्तर हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर इसी क्षेत्र के अन्तर्गत दिया जाता है।

(2) असामान्य व्यवहार के कारण (Causes of Abnormal Behaviour)-इसके अध्ययन क्षेत्र में असामान्यता या असामान्य व्यवहारों के कारणों का अध्ययन करना भी शामिल है। हम जानते है कि असामान्य व्यवहार के विकास में मुख्य तीन कारकों, जैविक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः इसके क्षेत्र के अन्तर्गत इन उपर्युक्त तीनों कारकों से विकसित असामान्य व्यवहारों का विधिवत् अध्ययन शामिल है।

(3) असामान्य व्यवहार के लक्षण (Symptoms of Abnormal Behaviour)-इसमें असामान्य व्यवहारों के लक्षणों (मुख्य रूप से शारीरिक तथा मानसिक लक्षणों) का अध्ययन भी शामिल है। इसमें मानसिक लक्षणों में संज्ञानात्मक विकृतियों, भावात्मक विकृतियों आदि का अध्ययन किया जाता है।

(4) असामान्य व्यवहार का उपचार (Treatment of Abnormal Behaviour)-इसके क्षेत्र के अन्तर्गत अलग-अलग प्रकार के असामान्य व्यवहार / व्यक्ति के उपचार का प्रयास किया जाता है। इसमें मुख्यतः दो प्रकार के उपचारों निरोधक एवं रोगनाशक उपचार (Preventive and Curative Treatment) का अध्ययन किया जाता हैं। निरोधक उपचार से तात्पर्य रोग को उत्पन्न करने वाले सम्भावित कारणों को नियन्त्रित करने से है, जिससे व्यक्ति उस रोग का शिकार होने से बच सकता है। वहीं रोगनाशक उपचार से तात्पर्य रोग हो जाने के बाद कुछ विशेष उपायों की सहायता से उस रोग को दूर करने से है। इस प्रकार असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत दोनों प्रकार के उपायों का अध्ययन कर, उनके अपने महत्त्व को निर्धारित किया जाता है।

(5) मानसिक विकृतियों का अध्ययन एवं वर्गीकरण (To Study and Classification of Mental Disorders)- इसके क्षेत्र के अन्तर्गत मानसिक विकृतियों का वर्गीकरण किया जाता है। असामान्य मनोविज्ञान का प्रारम्भिक क्षेत्र व्यवहार या मानसिक विकृतियों (Behavior or Mental Disorders) को विभिन्न भागों में विभाजित कर उसका अध्ययन करना है। प्राचीन भारतीय चिन्तकों ने असन्तुलन के आधार पर असामान्य व्यवहार को सतगुण (Satguna), रजोगुण (Rajoguna) एवं तमोगुणTamoguna) में विभाजित किया गया है। हीपोक्रेट्स ने असामान्य व्यवहार को तीन भागों उत्साह (Mania), विषाद (Melancholia) तथा उन्माद (Phrenesis) में विभाजित किया है। आधुनिक समय में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (American Psychological Association APA) के द्वारा व्यवहार या मानसिक विकृति के वर्गीकरण करने का बारम्बार प्रयास किया गया। इनके इस प्रयास को डीसीएम (Diagnostic and Statistical Manal of Mental Disorders DSM) के नाम से जाना जाता है। अब तक (DSM-1, DSM-II, DSM-III, DSM-III-R तथा DSM-IV. DSM-IV-TR. DSM-5) प्रकाशित हो चुके हैं। असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत इन सभी का सविस्तार अध्ययन कर उनके तर्क आधार (Rationales) एवं सार्थकता (Significance) को निश्चित करने का प्रयास किया जाता है।

व्यवहार विकृति या मानसिक विकृति के वर्गीकरण से सम्बन्धित असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) कार्यात्मक विकृति (Functional Disorder)- असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्यात्मक विकृति से सम्बन्धित विभिन्न बातों का अध्ययन किया जाता है। जैसे-कार्यात्मक विकृति किसे कहते हैं, इसके लक्षण, कारण क्या है तथा इसके प्रकार कौन-कौन हैं तथा यह संरचनात्मक विकृति से किस प्रकार भिन्न है आदि। यहाँ ध्यातव्य है कि कार्यात्मक विकृति के अन्तर्गत स्नायु विकृति [वर्तमान में चिन्ता विकृति (Anxiety Disorder)] एवं मनोविकृति (Psychosis) के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन किया जाता है।

(ii) संरचनात्मक विकृति (Structural Disorder) - असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत संरचनात्मक विकृति से सम्बन्धित विभिन्न बातों का भी विस्तृत अध्ययन किया जाता है। जैसे-संरचनात्मक विकृति अर्थ, परिभाषा, लक्षण, कारण एवं प्रकार तथा इसका उपचार कैसे किया जाता है आदि। यहाँ संरचनात्मक विकृति से तात्पर्य मानसिक दुर्बलता (Mental Deficiency) या मानसिक मन्दता (Mental Retardation) से है।

(iii) मनोदैहिक विकृति (Psychosomatic Disorder)-असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत मनोदैहिक विकृति के विभिन्न पक्षों (लक्षण, कारण, प्रकार एवं उपचार आदि) का सविस्तार अध्ययन किया जाता है। यहाँ ध्यातव्य यह है कि आमाशयांत्र विकृति (Gastrointestinal Disorder) श्वसन विकृति (Respiratory Disorder), हृदयवाहिका विकृति (Cardio-vascular Disorder), त्वचा विकृति (Skin Disorder) आदि की गणना मनोदैहिक विकृति (Skin Disorder) का अध्ययन क्षेत्र है।

iv) मस्तिष्क विकृति (Brain Disorder)-मस्तिष्क विकृति भी असामान्य मनोविज्ञान की ही विषयवस्तु है। मस्तिष्क विकृति से सम्बन्धित विभिन्न बातों का अध्ययन असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाता है।

(v) व्यक्तित्व विकृति (Personality Disorder) - असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत व्यक्तित्व विकृति से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों (लक्षण, कारण, प्रकार एवं उपचार आदि) का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार कह सकते है कि असामान्य मनोविज्ञान का क्षेत्र वास्तव में अत्यन्त व्यापक है तथा इसकी विषयवस्तु बहुत जटिल तथा बहुविमीय है।